पंचदशीतंत्र

६	१	८
७	५	३
२	९	४

श्रीः

भाषाटीकासहितं

पंचदशीतंत्रम्

—०❀०—

मुद्रक एवं प्रकाशक:

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

संस्करण : जनवरी २०१६, सवंत् २०७२

मूल्य : १५ रुपये मात्र

मुद्रक एवं प्रकाशकः

खेमराज श्रीकृष्णदास,™

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers
Khemraj Shrikrishnadass
Prop: Shri Venkateshwar Press
Khemraj Shrikrishnadass Marg,
7th Khetwadi, Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.khe-shri.com
E-mail : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj for M/s Khemraj Shrikrishnadass
Prop. Shri Venkateshwar Press, Mumbai-400004,
at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate,
Pune -411 013.

श्रीगणेशाय नमः

अथ

पंचदशीतंत्रम्

कैलासशिखरे रम्ये गौरी पृच्छति शंकरम् ।
स्वामिन् प्रभो जगन्नाथ भक्तानुग्रहकारक ॥ १ ॥
पञ्चदशीं दयां कृत्वा लोकानां हितकारणात् ।
वक्तुमर्हसि देवेश श्रोतुमिच्छामि सांप्रतम् ॥ २ ॥

एक समय रम्य कैलासशिखर पर पार्वतीजी और महादेवजी दोनों बैठे थे उस समयमें पार्वती महादेवजीसे पूछती है कि, हे भक्तोंके ऊपर अनुग्रह करनेवाले ! हे जगत्के नाथ ! हे प्रभो ! हे मेरे स्वामिन् ! हे देवेश ! लोगोंके हितके लिये कृपा करके आप पंचदशीका विधान मुझसे कहिये, आप कहनेके योग्य हो और मैं भी सुननेकी इच्छा करती हूँ ॥ १ ॥ २ ॥

श्रीशिव उवाच

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि पञ्चदश्या विधानकम् ।
शांतियंत्रं च लोकेऽस्मिन्सर्वं देवि प्रकीर्तितम्३॥

महादेवजी बोले, हे देवि ! सुन मैं पंचदशीका विधान तुझसे कहता हूं, किंतु पंचदशीका विधान, शांति यंत्र आदि सब मैंने पहिलेही लोकमें प्रसिद्ध किया है॥ ३॥

पञ्चदशीमहायन्त्रं सर्वसिद्धिप्रदायकम् ।
गुह्यं रक्ष्यमहो लोके देवानामपि दुर्लभम् ॥४॥

पंचदशीका महायंत्र सब सिद्धियोंका देनेवाला है तथा यह बहुत गोपनीय और रक्षणीय है, बहुत क्या कहूं यह यंत्र देवताओंको भी दुर्लभ है ॥ ४ ॥

मन्त्रोद्धारः

मन्त्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि शृणु देवि समाहिता ।
मन्त्रो यथा । ॐ ह्रीं श्रीं हरः ।
एतन्मन्त्रं महामन्त्रं सर्वसिद्धिप्रदायकम् ।
जलेऽग्नौ च तथा भूमौ यंत्राणि च समर्पयेत्॥५॥

हे देवि ! अब मैं पहिले तुझसे मन्त्रोद्धार कहता हूं, तू सावधान होकर सुन । 'ॐ ह्रीं श्रीं हरः यहः, मंत्र है । यह पंचाक्षरी महामंत्र सब सिद्धियोंका देनेवाला है। यह यंत्रभी जल, अग्नि और पृथ्वी इन तीन स्थानोंमें अर्पित करे ५॥

चन्द्रनेत्रे तथा वह्निर्वेदबाणरसास्तथा ।
मुनिनागग्रहा ज्ञेयाः पञ्चदश्यास्तु मध्यगाः॥ ६॥

पंचदशीयन्त्रम् ।

६	१	८
७	५	३
२	९	४

१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९ ये नौ अंक इस पंचदशीके महायंत्रके मध्यमें योजित किये जाते हैं ॥ ६ ॥

अथातः संप्रवक्ष्यामि प्रयोगं महदद्भुतम् ।
रवौ वारेऽर्कदुग्धेन श्मशानभस्मना लिखेत्॥७॥
साध्यवर्णस्य नामानि चितामध्ये विनिक्षिपेत् ।
विक्षिप्तो जायते मर्त्य अष्टोत्तरशतं जपेत् ।
पञ्चदशीविलोमं तु सन्ध्याकाले विशेषतः ॥८॥

चन्द्रवारे गृहीत्वा तु श्वेतदूर्वां च केशरम् ।
श्वेतगुञ्जासमायुक्तं कपिलापयमध्यतः ॥ ९ ॥

हे देवि ! अब मैं तुझसे अद्भुत प्रयोगोंको कहता हूं, तू सुन। रविवारके दिन आकके दूधमें श्मशान भस्म (चिता-भस्म) मिलाकर उससे भोजपत्रके ऊपर जिस मनुष्यका नाम लिखकर उक्त मंत्र १०८ वार जपकर चितामें डाला जाता है वह मनुष्य विक्षिप्त हो जाता है। पंचदशीको विलोम करना हो तो संध्याकालमें करे और सोमवारके दिन सफेद दूब, केशर, सफेद गुंजा इनके चूर्णको कपिला गौके दूधमें मिश्रित कर उससे लिखे ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥

भौमवारे गृहीत्वा तु काकरक्तं सपक्षकम् ।
नामाक्षरं लिखेद्यन्त्रे मौनभावयुतो नरः ॥ १० ॥
तस्य द्वारे खनेद्भूमावुच्चाटनं भवेत् ।
कुटुम्बानां च सर्वेषां यदि शक्रसमोऽरिपुः ॥ ११ ॥

मंगलवारके दिन सपक्ष काकके रक्तसे यंत्रमें अपने शत्रुके नामाक्षर मौनतासे लिखकर उसको शत्रुके गृह

द्वारमें थोडी भूमि खोदकर उसमें गाड देवे तो इस यन्त्रं-
का उल्लंघन होतेही उस शत्रुके सब कुटुंबका उच्चाटन
होता है, चाहे वह शत्रु इंद्रके समान पराक्रमी भी
क्यों न हो ॥ १० ॥ ११ ॥

बुधवारे गृहीत्वा तु नागकेशररोचनम् ।
सर्षपातैलयुक्तेन लिखेद्यन्त्रं तदुत्तमम् ॥ १२ ॥
कृत्वा तु वर्त्तिकां तस्य चालयेन्मन्त्रमावितताम् ।
नृकपाले कज्जलं तु तज्जपेन्मोहनं जगत् ॥ १३ ॥

बुधवारके दिन नागकेशर और गोरोचन इन दोनोंका
चूर्ण सरसोंके तेलमें मिश्रित कर उससे भोजपत्रके ऊपर
उत्तम रीतिसे इस यंत्रको लिखके इसकी बत्ती बनाकर
पूर्वोक्त मंत्रसे अभिमंत्रित कर नरकपालमें प्रज्वलित करे
और कज्जल तैयार करे, इससे सब जगत् मोहित होता
है ॥ १२ ॥ १३ ॥

गुरुवारे हरिद्रे द्वे रोचनागुरुसघृतम् ।
यन्त्रराजं समालिख्य तस्य मध्ये तु नामकम् १४

आसनान्ते खनित्वा तु यन्त्रं स्थाप्यं शुमानने ।
कर्षणं जायते देवि नान्या श्रेष्ठा क्रिया स्मृता १५

हे शुभानने पार्वति! गुरुवारके दिन हलदी, दारुहलदी, गोरोचन और अगुरु इनका चूर्ण घीमें मिश्रित कर उससे भोजपत्रके ऊपर इस यंत्रको लिखकर उसके मध्यभागमें जिस मनुष्यपर प्रयोग करना है उसका नाम लिखकर उस मनुष्यके आशनके समीपमें थोड़ी भूमि खोदकर उसमें इस यंत्रको गाड देवे तो उस मनुष्यका आकर्षण होगा आकर्षण करनेके विषयमें इससे श्रेष्ठ क्रिया दूसरी नहीं है १४॥१५

प्रयोगान्तरम् ।

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि प्रयोगं महदद्भुतम् ।
भृगुवारे सकर्पूरं वचकुष्ठं मधुसमम् ॥ १६ ॥
लिखित्वा यन्त्रराजं तु भूर्जपत्रे सुशोभनम् ।
दृष्ट्वा स्त्री वशमायाति प्राणैरपि धनैरपि ॥१७॥

हे देवि ! अब मैं दूसरा अद्भुत प्रयोग कहता हूं सुन शुक्रवारके दिन कपूर, वच और कुष्ठ इनका चूर्ण सहतमें

मिलाकर उससे भोजपत्रके ऊपर इस यंत्रराजको लिखकर स्त्रीको दिखावे तो इस यंत्रराजको देखतेही स्त्री प्राण और धनके सहित वश्य होती है ॥ १६ ॥ १७ ॥

अन्यः प्रयोगः

शनिवारे चिताकाष्ठे पंचदश्या विलोमकम् ।
लिखित्वा यस्य नामानि श्मशाने निखनेद्बुधः ।
कुक्कुटस्य तु रक्तेन म्रियते नात्र संशयः॥१८॥

शनिवारके दिन चिताके काष्ठके ऊपर इस पंचदशी-यंत्रको विलोम (उलटे) रीतिसे लिखकर उसके बीचमें मुर्गेके रक्तसे शत्रुका नाम लिखकर उसको श्मसानभूमिमें गाड देवे तो शत्रु मृत्युको प्राप्त होता है, इसमें संदेह नहीं है ॥ १८ ॥

विधानम् ।

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि यन्त्रराजविधिं तथा ।
यस्मै कस्मै न दातव्यं गोपनीयं च यत्नतः१९

हे देवि ! अब मैं तुझसे इस यंत्रराजका विधान कहता

हूं सुन, परंतु इसको गुप्त रखना चाहिये, हर एकको कहना उचित नहीं है ॥ १९ ॥

वटवृक्षतले यन्त्रं भूमिमध्ये ततो लिखेत् ।
कृष्णपक्षत्रयोदश्यां लेखिनीं वटवृक्षजाम् ॥२०॥
नीत्वारम्भं विधातव्यमेकचित्तेन मानवैः ।
अयुतं प्रजपेद्देवि धर्मकामार्थमोक्षदम् ॥ २१ ॥

हे देवि ! कृष्ण पक्षकी त्रयोदशीमें एकाग्रचित्तसे वटवृक्षके नीचे बैठकर बड़ी कलमसे भोजपत्रके ऊपर इस यंत्रको लिखकर धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष इन चारों पुरुषार्थोंका देनेवाले पूर्वोक्त मंत्रराजका एक अयुत (१००००) जप करे ॥ २० ॥ २१ ॥

दाड़िमीवृक्षलेखिन्या भूमौ यन्त्रं सहस्रकम् ।
लिखित्वा जायते मोक्षो बन्दिनश्च वरानने २२

हे वरानने! दाड़िमवृक्षके कलमसे भूमिपर इस यंत्रको १००० वार लिखे तो बंदी मुक्त होता है ॥ २२ ॥

ब्रह्मवृक्षस्य लेखिन्या यन्त्रं पंचशतं लिखेत् ।

भूमिमध्ये दरिद्रस्य नाशनं भवति ध्रुवम्॥२३॥

ब्रह्म वृक्षके कलमसे भूमिपर इस यंत्रको ५०० बार लिखे तो दारिद्य नष्ट होता है ॥ २३ ॥

गोमूत्रं च शिलां चैव कर्पूरागुरुमिश्रितम् ।
एकीकृत्याश्वत्थमूले लिखेद्यन्त्रं तु भूर्जके २४
चिंतितं चाचिरेणैव जायते देवि निश्चितम् ।
प्रतापाल्लभते भोगानिन्द्रतुल्यपराक्रमान् ॥२५॥

गोमूत्र, मनशिल, कपूर और अगुरु इनको एकत्र कर उससे पीपलवृक्षके नीचे बैठकर भोजपत्रके ऊपर इस यंत्रको लिखे तो मनोवांछित कार्य शीघ्रही सिद्ध होता है और इस यंत्रराजके प्रतापसे इंद्रके तुल्य पराक्रम और भोगोंकी प्राप्ति होती है ॥ २४ ॥ २५ ॥

बिल्पत्ररसं ग्राह्यं हरितालमनः शिले ।
बिल्वशाखजलेखिन्या सहस्राद्वितयं लिखेत् २६
एकान्ते च शुभस्थाने भूमिमध्ये तथैव च ।
विलिख्यात्र शुभं यंत्रं वाचां सिद्धिः प्रजायते२७

बेलपत्रका रस, हरताल और मनशिल इनको एकत्र कर बेलवृक्षके कलमसे एकांतस्थानमें भूमिपर इस यंत्रको २००० वार लिखे तोवाणीकी सिद्धि होती है २६॥२७

अर्कपत्ररसेनैव अर्कपत्रं समालिखेत् ।
अष्टोत्तरशतं चैव रिपुवंशमिनाशकृत् ॥२८॥

आकके पत्रके रससे आककेही पत्तेपर इस यंत्रको १०८ वार लिखे तो शत्रुका वंश नष्ट होता है ॥२८॥

किकरीवृक्षबन्धाद्वैज्वरादिशूलकं तनौ ।
जायते नात्र संदेहो यदि शक्रसमो रिपुः ॥२९॥

इस यंत्रको कीकरीवृक्षमें बांध देवे तो निश्चयसे शत्रुके शरीरमें ज्वर शूलादि व्याधियां उत्पन्न होवें, चाहे वह शत्रु इंद्रके तुल्य भी क्यों न हो॥ २९ ॥

पाषाणस्तम्भनं देवि शत्रुद्वारे च भूमिके ।
हरिद्रालिखितं यन्त्रं स्थाप्यं तत्र सुशोभनम् ३०
एवं कृते तु देवेशि पितृपुत्रादिकैः सह ।
शत्रोः प्रजायते द्वेषो सत्यं सत्यं ब्रवीमि ते ३१

हे देवि ! हलदीसे भोजपत्रके ऊपर इस शोभन यंत्रको लिखकर शत्रुके गृहद्वारमें गाड देवे तो यह पाषाणस्तंभननामक प्रयोग हो गया, हे देवेशि ! मैं तुझसे सत्य २ कहता हूं कि,इस प्रयोगसे शत्रुका पिता तथा पुत्रोंकेसाथ द्वेषभाव हो जावेगा ॥ ३० ॥ ३१ ॥

अपामार्गरसेनैव लिखितं भोजपत्रके ।
ऐकाहिकं तृतीयं च चतुर्थज्वरनाशनम्‌ ॥३२॥

अपामार्गके रससे भोजपत्रके ऊपर इस यंत्रको लिखकर धारण करे तो ऐकाहिक, तिजारी तथा चौथिया ये तीनों ज्वर नष्ट होते हैं ॥ ३२ ॥

भृंगराजरसेनैव यन्त्रं लेख्यं तु भूर्जके ।
धारयेद्वापि हृदये विवादविजयो भवेत्‌ ॥३३॥

भृंगराजके रससे भोजपत्रके ऊपर इस यंत्रको लिखकर हृदयमें धारणकरे तो विवादमें जय प्राप्त होता है ३३॥

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि यन्त्रराजस्य सिद्धिदम्‌ ।
लक्षयन्त्रं समालिख्य सिद्धे पीठे शुभे दिने ३४

भूमिमध्ये शुद्धचित्तो भूमिशायीजितेन्द्रियः ।
हवनादिकं तु कुर्याञ्च सर्षपाघृततण्डुलैः ।
शर्करामिश्रितैश्चैव यन्त्रसिद्धिः प्रजायते ॥३५॥

हे देवि ! मैं तुझसे इस यंत्रराजकी सिद्धिका विधान कहता हूं, सुन साधक शुभ दिनमें जितेंद्रिय, भूमिशायी तथा शुद्धचित्त होकर सिद्धपीठमें भूमिपर इस यंत्रको १००००० बार लिखकर सरसों, घी, चांवल और शक्कर इन चारोंका विधिपूर्वक होम करे तो इस यंत्रकी सिद्धि होती है ॥ ३४ ॥ ३५ ॥

यानि यानि च कर्माणि एकयन्त्रे समालिखेत् ।
क्षणमात्रेण सिद्धिः स्यात् सत्यं सत्यं पुनः पुनः।
देवरूपो भवेद्देवि नरः शीघ्रक्रियाकरः ॥ ३६ ॥

हे देवि । यह मैं सत्य २ और पुनः२ कहता हूं कि, जो कुछ कर्म हो उसको इस एक यंत्रराजमें लिख देवे तो उस कर्मकी एक क्षणमात्रमें सिद्धि होती है ॥३६॥

भूर्जपत्रे लिखेद्यंत्रं रोचनागुरुकुङ्कुमैः ।
कृत्वा च धूपदीपादि जलमध्ये विनिक्षिपेत् ३७
रात्र्यन्ते स्वप्नमध्ये तु वरं देवि ददाम्यहम् ।
जीवन्मुक्तः सुभागी च सर्वान्कामानवाप्नुयात् ३८

गोरोचन, अगुरु और कुंकुम इनको एकत्र कर इससे भोजपत्रके उपर इस यंत्रको लिखकर धूप दीपादि देकर जो जलमें फेंकता है उसको मैं रात्रिके समय स्वप्नमें वर-दान देता हूं जिससे वह सुभागी और जीवन्मुक्त होता है तथा उसके सब मनोरथ पूर्ण होते हैं ॥ ३७ ॥ ३८ ॥

देवदत्तं महावीरं पञ्चदश्यास्तु यन्त्रकम् ।
वश्यं करोतु मे देवि जलमध्ये प्रवाहितम् ३९
दुग्धमाषतिलांश्चैव शर्कराघृतवीरकान् ।
एकीकृत्य बलिं दद्यात् कृष्णपक्षाष्टमीतिथौ ४०
वश्यो भवति वीरोऽयं प्राणैरपि धनैरपि ।
सर्वकर्माणि सिद्धिं च यान्ति नात्र विचारणा ४१

हे देवि ! यह जलमें प्रवाहित किया पंचदशीयंत्र देवदत्त (अमुक) महावीरको मेरे वशमें करे यों कहकर दूध, उडद, तिल, शक्कर, घी तथा करवीरवृक्षके पुष्प इन सबको एकत्र करके कृष्णपक्षकी अष्टमी तिथिमें बलिदान देवे तो उक्त महावीर प्राणोंके तथा धनके साथ वश्य होता है और सब कार्य सिद्ध होते हैं, इस विषयमें कुछभी विचार नहीं करना चाहिये ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥

इति भाषाटीकासहितं पंचदशीतंत्रं समाप्तम् ।

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व ख़रीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग.
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट.
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१
दूरभाष ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS